समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	7-02-25	4	1-4

जलवायु परिवर्तन के कारण हो रही है तापमान में बढ़ौतरी

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज साथ किसान व अन्य।

तापमान बढ़ने से फसलों पर पड़ता है असर

हिसार, 6 फरवरी (राठी): जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है, जिससे फसलों के उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। वायुमंडल का तापमान बढ़ने से विभिन्न फसलों के उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

ज्ञात रहे कि गेहूं, सरसों, जौ और आलू सहित विभिन्न फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है जबकि तापमान का बढ़ना उनके लिए हानिकारक होता है, अधिक तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार और धान आदि फसलों का क्षरण (नाश) हो सकता है। वैसे जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से वर्षा में भी कमी आ जाती है। कार्बनडाइऑक्साइड, कीट एवं रोगों में भी जलवायु परिवर्तन के कारण वृद्धि होती है।

फसलों की बिजाई के लिए अनुकूल तापमान

फसल	अधिकतम तापमान	न्यूनतम तापमान	औसत तापमान (डिग्री सैल्सियस)
देसी कपास	35.7-39.8	15.9-21.8	20.0-31.0
नरमा	39.1-40.9	39.1-40.9	29.4-32.8
गेहूं	23.0-31.	45.5-12.2	14.3-21.8
चना	25.4-32.2	6.7-13.5	16.1-22.9
सरसों	31.4-34.5	12.2-17.1	21.8-25.8

हर साल बदल रहा है मौसम, बारिश के दिनों की घट रही है संख्या

मौसम में हर साल कुछ न कुछ बदलाव जरूर हो रहा है। इसका असर भी देखने को मिल रहा है। तापमान में भी उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है।

पिछले एक साल में मौसम में कई बदलाव देखने को मिले। बेमौसमी बारिश, ओलावृष्टि भी देखने को मिल रही है। यही नहीं बारिश के दिनों की संख्या घट रही है। गर्मी के दिनों की संख्या ज्यादा हो रही है।

मौसम विभाग को आए दिन अलर्ट जारी करने पड़ रहे हैं। दिसम्बर, जनवरी में पहले जहां रात्रि तापमान जमाव बिन्दू के नीचे तक पहुंच जाता है, लेकिन इस बार हिसार में ऐसा देखने को नहीं मिला।

हकृवि में हुआ जलवायु परिवर्तन पर कार्यक्रम

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई।

छात्र कल्याण निदेशक व मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा जलवायु परिवर्तन को लेकर समय-समय पर किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यशाला में डॉ. अनिल कुमार, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. चंद्रशेखर डागर ने भी जलवायु परिवर्तन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर कुलसचिव सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

जलवायु परिवर्तन को किया जा सकता है कृषि क्षेत्र में कम

वर्षा जल के उचित प्रबंधन, जैविक एवं मिश्रित, कृषि फसल उत्पादन में नई तकनीक का विकास तथा जलवायु स्मार्ट कृषि के तहत निर्धारित मापदंडों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन को कृषि के क्षेत्र में कम किया जा सकता है।

डा.राजबीर गर्ग,
अनुसंधान निदेशक।

किसान पौधारोपण, मृदा प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई, सौर उर्जा का उपयोग करके कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन से बचा सकते हैं।

किसान छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रख कर बढ़ते हुए तापमान को रोकने अथवा कम करने में अपना योगदान दे सकते हैं।

प्रो.बी.आर.काम्बोज,
कुलपति हकृवि।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	7.02.25	3	6-7

जलवायु परिवर्तन से फसल उत्पादन में गिरावट की संभावना : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज़ | हिसार

एचएयू में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम किया गया। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है जिससे फसलों के उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। वायुमंडल का तापमान बढ़ने से विभिन्न फसलों के उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। गेहूं, सरसों, जौ और आलू सहित विभिन्न फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है जबकि तापमान का बढना उनके लिए हानिकारक होता है। अधिक तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार और धान आदि फसलों का क्षरण (नाश) हो सकता है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से वर्षा में भी कमी आ जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	7.02.25	2	1-4

कार्यक्रम

एचएयू में जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम

ड्रिप सिंचाई जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को करती है कम

संवाद न्यूज एजेंसी

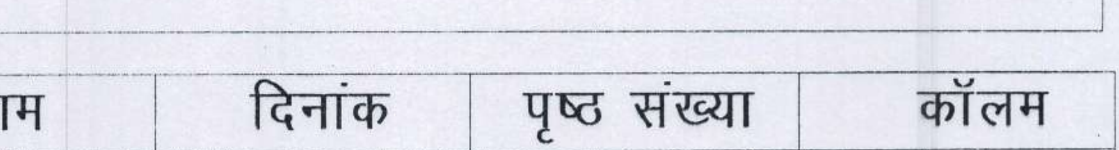

एचएयू में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज के साथ किसान व अन्य। स्रोत : संस्थान

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि मौसम विज्ञान विभाग की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों से कहा कि वे पौधारोपण, मृदा प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई, सौर उर्जा का उपयोग करके कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन से बचा सकते हैं। कुलपति ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है।

इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है, जिससे फसलों के उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से वर्षा में भी कमी आ जाती है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि वर्षा जल के उचित प्रबंधन, जैविक एवं मिश्रित, कृषि फसल उत्पादन में नई तकनीक का विकास और जलवायु स्मार्ट कृषि के तहत निर्धारित मापदंडों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन को कृषि के क्षेत्र में कम किया जा सकता है।

छात्र कल्याण निदेशक व मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा जलवायु परिवर्तन को लेकर समय-समय पर किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यशाला में डॉ. अनिल कुमार, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. चंद्रशेखर डागर ने भी जलवायु परिवर्तन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर कुलसचिव सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	07.02.25		

जलवायु परिवर्तन से कृषि के दुष्प्रभावों की दी जानकारी

हकृवि में जलवायु परिवर्तन कार्यक्रम में मंच पर मौजूद वीसी प्रो. बीआर काम्बोज।

जासं • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि मौसम विज्ञान विभाग की तरफ से आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। तापमान बढ़ने से फसलों के उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	7.02.25	5	6-8

ड्रिप सिंचाई व सौर ऊर्जा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में सहायक : प्रो. काम्बोज

हकृवि में जलवायु परिवर्तन पर कार्यक्रम आयोजित

हिसार, 6 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है जिससे फसलों के उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। वायुमंडल का तापमान बढ़ने से विभिन्न फसलों के उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। साथ हैं किसान व अन्य।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से वर्षा में भी कमी आ जाती है। कार्बनडाइऑक्साइड, कीट एवं रोगों में भी जलवायु परिवर्तन के कारण वृद्धि होती है। कुलपति ने किसानों से कहा कि वे पौधारोपण, मृदा प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई, सौर उर्जा का उपयोग करके कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन से बचा सकते हैं। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि वर्षा जल के उचित प्रबंधन, जैविक एवं मिश्रित, कृषि फसल उत्पादन में नई तकनीक का विकास तथा जलवायु स्मार्ट कृषि के तहत निर्धारित मापदंडों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन को कृषि के क्षेत्र में कम किया जा सकता है। छात्र कल्याण निदेशक व मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा जलवायु परिवर्तन को लेकर समय-समय पर किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यशाला में डॉ. अनिल कुमार, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. चंद्रशेखर डागर ने भी जलवायु परिवर्तन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर कुलसचिव सहित सभी महाविद्यालयों के अधिष्ठाता, निदेशक, अधिकारी, वैज्ञानिक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	7-02-25	11	7-8

हिसार। मंच पर उपस्थित कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य। फोटो: हरिभूमि

जलवायु परिवर्तन : कृषि क्षेत्र पर प्रभाव करने के उपायों पर की चर्चा

हरिभूमि न्यूज ▶▶हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने गुरुवार को बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है जिससे फसलों के उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। वायुमंडल का तापमान बढ़ने से विभिन्न फसलों के उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। गेहूं, सरसों, जौ और आलू सहित विभिन्न फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है जबकि तापमान का बढ़ना उनके लिए हानिकारक होता है, अधिक तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार और धान आदि फसलों का क्षरण (नाश)

निर्धारित मापदंड अपनाएं

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि वर्षा जल के उचित प्रबंधन, जैविक एवं मिश्रित, कृषि फसल उत्पादन में नई तकनीक का विकास तथा जलवायु स्मार्ट कृषि के तहत निर्धारित मापदंडों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन को कृषि के क्षेत्र में कम किया जा सकता है।

जागरूकता जरूरी

छात्र कल्याण निदेशक व मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा जलवायु परिवर्तन को लेकर समय-समय पर किसानों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यशाला में डॉ. अनिल कुमार, डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. चंद्रशेखर डागर ने भी जलवायु परिवर्तन के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी।

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से वर्षा में भी कमी आ जाती है। कार्बनडाइऑक्साइड, कीट एवं रोगों में भी जलवायु परिवर्तन के कारण वृद्धि होती है। कुलपति ने किसानों से कहा कि वे पौधारोपण, मृदा प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई, सौर उर्जा का उपयोग करके कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन से बचा सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसान छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रख कर बढ़ते हुए तापमान को रोकने अथवा कम

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	06.02.25		

ड्रिप सिंचाई व सौर ऊर्जा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम करने में सहायक

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अखिल भारतीय समन्वित कृषि-मौसम विज्ञान अनुसंधान परियोजना के तहत जलवायु परिवर्तन विषय पर एक दिवसीय किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कृषि मौसम विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में किसानों को जलवायु परिवर्तन से कृषि क्षेत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के उपायों के बारे में जानकारी दी गई। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। इसके कारण बाढ़, सूखा, कृषि संकट, खाद्य सुरक्षा और बीमारियों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है जिससे फसलों के उत्पादन में भी गिरावट आने की संभावना है। वायुमंडल का तापमान बढ़ने से विभिन्न फसलों के उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। गेहूं, सरसों, जौ और आलू सहित विभिन्न फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है जबकि तापमान का बढ़ना उनके लिए हानिकारक होता है, अधिक तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार और धान आदि फसलों का क्षरण (नाश) हो सकता है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि होने से वर्षा में भी कमी आ जाती है। कुलपति ने किसानों से कहा कि वे पौधारोपण, मृदा प्रबंधन, ड्रिप सिंचाई, सौर उर्जा का उपयोग करके कृषि क्षेत्र को जलवायु परिवर्तन से बचा सकते है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि वर्षा जल के उचित प्रबंधन, जैविक एवं मिश्रित, कृषि फसल उत्पादन में नई तकनीक का विकास तथा जलवायु स्मार्ट कृषि के तहत निर्धारित मापदंडों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन को कृषि के क्षेत्र में कम किया जा सकता है। मौसम विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खीचड़ ने बताया कि जलवायु परिवर्तन को लेकर किसानों को जागरुक किया जा रहा है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	7-02-25	3	2-5

हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो : प्रो. काम्बोज

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में विज्ञान उत्सव का समापन

जागरण संवाददाता • हिसार : गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (गुजवि) में आयोजित विज्ञापन उत्सव का वीरवार को समापन हुआ। विज्ञान उत्सव के तीसरे दिन विज्ञान तथा पर्यावरण संरक्षण विषय पर विश्वविद्यालय की एनएसएस की टीम ने नाटिका का मंचन किया, जिसमें विज्ञान के प्रति प्रेरित किया। स्माल साइंस बिग ड्रीम्स विषय पर प्रो. नीरज दिलबागी ने विशेष व्याख्यान दिया। विज्ञान उत्सव के समापन समारोह में एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज बतौर मुख्यातिथि रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है, जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो तथा नागरिकों को खाद्य सुरक्षा मुहैया कराने के साथ-साथ प्रकृति का संरक्षण भी करे। विज्ञान से ही यह संभव बनाया जा सकता है। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई समारोह में बतौर मुख्य संरक्षक रहे।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा है। भारतीय वैज्ञानिकों ने दुनिया को विज्ञान, तकनीक एवं नवाचार के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही राह दिखाई है। उन्होंने आर्यभट्ट, सीवी रमन, मैरी क्यूरी तथा डा. अब्दुल कलाम जैसे महान वैज्ञानिकों का जिक्र करते हुए विद्यार्थियों को बताया कि इन वैज्ञानिकों ने संघर्षों और चुनौतियों का सामना करते हुए विज्ञान की नई खोजों के माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपना सर्वोच्च योगदान दिया है।

विज्ञान केवल दुनिया को समझने के बारे में ही नहीं है, बल्कि यह विकास की नींव है और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति भी है। चाहे अक्षय ऊर्जा हो, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हो, जैव प्रौद्योगिकी हो या अंतरिक्ष अन्वेषण हो, विज्ञान में असीम संभावनाएं है।

विज्ञान उत्सव के समापन समारोह में विजेताओं को सम्मानित करते मुख्यातिथि वीसी प्रो .बीआर काम्बोज व प्रो . नरसी राम।

विज्ञानी सोच उत्पन्न करने में मील का पत्थर साबित होगा : डा. विजय

कुलसचिव डा . विजय कुमार ने कहा कि यह विज्ञान उत्सव स्कूली विद्यार्थियों में विज्ञानी सोच उत्पन्न करने में मील का पत्थर साबित होगा। इस उत्सव ने युवाओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार को समझने के लिए मंच उपलब्ध करवाया है।

माडल प्रदर्शनी में ये रहे विजेता

माडल प्रदर्शनी की स्कूल श्रेणी में प्रथम स्थान ओपी जिंदल माडर्न स्कूल हिसार के विवेन गोयल व सना तथा मनास गोयल व आरव शर्मा की टीमों को मिला। दूसरे स्थान पर जीएमएस दयाल सिंह कालोनी हांसी के हैप्पी व रोनक, पीएम श्री जीएसएसएस गंगवा की हिमांशी व महक, एसएंडटी जीएसएस डोभी के अनश व विशान, जीएसएस पुटठी सामण के सागर तथा आदर्श हाई स्कूल आदमपुर की एकता व करीना की टीमों को मिला। माडल प्रदर्शनी की महाविद्यालय श्रेणी में प्रथम स्थान राजकीय महाविद्यालय बरवाला के संजय कुमार, कालेज आफ फिशरी साइंस, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की सुहानी, अवनीश, लवीश शरण, मोहित, अजय, जय सैनी, कार्तिक व दीपक की टीम को संयुक्त रूप से मिला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	7.02.25	5	1-5

हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो : प्रो. काम्बोज

हिसार, 6 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा): सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा है कि हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो तथा नागरिकों को खाद्य सुरक्षा मुहैया कराने के साथ-साथ प्रकृति का संरक्षण भी करे। विज्ञान से ही यह संभव बनाया जा सकता है। प्रो. बी.आर. काम्बोज गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार (गुजविप्रौवि) में आयोजित हुए विज्ञान उत्सव के समापन समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। गुजविप्रौवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई इस समारोह में बतौर मुख्य संरक्षक उपस्थित रहे। प्रो. बी. आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने की जिम्मेदारी देश के शिक्षकों की है। शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल की पहचान करें तथा उस कौशल को बढ़ाने के लिए कार्य करें।

गुजविप्रौवि हिसार में विज्ञान उत्सव के समापन समारोह में मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज को सम्मानित करते हुए कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई।

उन्होंने कहा कि यह उत्सव निश्चित तौर पर विज्ञान व तकनीक को समाज के हर कोने तक पहुंचाने का कार्य करेगा। साथ ही उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों के लिए देश के विश्वविद्यालयों को भी आपस में मिलकर कार्य करना होगा। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा है। भारतीय वैज्ञानिकों ने दुनिया को विज्ञान, तकनीक एवं नवाचार के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही राह दिखाई है। उन्होंने आर्यभट्ट, सीवी रमन, मैरी क्यूरी तथा डा. अब्दुल कलाम जैसे महान वैज्ञानिकों का जिक्र करते हुए विद्यार्थियों को बताया कि इन वैज्ञानिकों ने संघर्षों और चुनौतियों का सामना करते हुए विज्ञान की नई खोजों के माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपना सर्वोच्च योगदान दिया है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. विजय कुमार ने इस अवसर पर कहा कि यह विज्ञान उत्सव स्कूली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करने में मील का पत्थर साबित होगा। एसपीएसटीआई के सचिव प्रो. केया धर्मवीर ने तीन दिवसीय विज्ञान उत्सव की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा इस आयोजन में शानदार सहयोग व व्यवस्था की गई।

भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा : प्रो. नरसी राम बिश्नोई

साइंस उत्सव की नोडल ऑफिसर डीन एफपीएसटी प्रो. सुजाता सांघी ने स्वागत संबोधन किया तथा एसपीएसटीआई के अध्यक्ष धर्मवीर सिंह (सेवानिवृत आईएएस) ने धन्यवाद संबोधन प्रस्तुत किया। विज्ञान उत्सव के तीसरे दिन स्माल साइंस बिग ड्रीम्स विषय पर प्रो. नीरज दिलबागी द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया तथा विज्ञान तथा पर्यावरण संरक्षण विषय पर विश्वविद्यालय की एनएसएस की टीम द्वारा नाटिका का मंचन भी किया गया। मॉडल प्रदर्शनी की स्कूल श्रेणी में प्रथम स्थान ओपी जिंदल मॉडर्न स्कूल हिसार के विवेन गोयल व सना तथा मनास गोयल व आरव शर्मा की टीमों को मिला। दूसरे स्थान पर जीएमएस दयाल सिंह कॉलोनी हांसी के हैप्पी व रोनक, पीएमश्री जीएसएसएस गंगवा की हिमांशी व महक, एसएंडटी जीएसएस डोभी के अनश व विशान, जीएसएस पुटठी सामण के सागर तथा आदर्श हाई स्कूल आदमपुर की एकता व करीना की टीमों को मिला। मॉडल प्रदर्शनी की महाविद्यालय श्रेणी में प्रथम स्थान राजकीय महाविद्यालय बरवाला के संजय कुमार, कॉलेज ऑफ फिशरी साइंस, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की सुहानी, अवनीश, लवीश शरण, मोहित, अजय, जय सैनी, कार्तिक व दीपक की टीम को संयुक्त रूप से मिला। दूसरे स्थान पर सीआरएम जाट महाविद्यालय हिसार की तनवी, सोनिका, उमंग व जसविन्द्र की टीम रही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	7.02.25	4	2-5

जीजेयू में चल रहे विज्ञान उत्सव के समापन समारोह में बोले प्रो. काम्बोज

खाद्य सुरक्षा के साथ प्रकृति का भी संरक्षण जरूरी, जो विज्ञान से संभव

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज का कहना है कि हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो और नागरिकों को खाद्य सुरक्षा मुहैया कराने के साथ-साथ प्रकृति का संरक्षण भी करे। विज्ञान से ही यह संभव बनाया जा सकता है। वे जीजेयू में चल रहे विज्ञान उत्सव के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। जीजेयू कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मुख्य संरक्षक थे।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने की जिम्मेदारी देश के शिक्षकों की है। शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल की पहचान करें तथा उस कौशल को बढ़ाने के लिए कार्य करें। यह उत्सव निश्चित तौर पर विज्ञान व तकनीक को समाज के हर कोने तक पहुंचाने का कार्य करेगा। साथ उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों के लिए देश के विश्वविद्यालयों को भी आपस में मिलकर कार्य करना होगा।

कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा है। भारतीय वैज्ञानिकों ने दुनिया को विज्ञान, तकनीक एवं नवाचार के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही राह दिखाई है। उन्होंने आर्यभट्ट, सीवी रमन, मैरी क्यूरी तथा डॉ. अब्दुल कलाम जैसे महान वैज्ञानिकों का जिक्र करते हुए विद्यार्थियों को बताया कि इन वैज्ञानिकों ने संघर्षों और चुनौतियों का सामना माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपना सर्वोच्च योगदान दिया है। विज्ञान केवल दुनिया को समझने के बारे में ही नहीं है, बल्कि यह विकास की नींव है और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति भी है। कुलसचिव डॉ. विजय कुमार ने कहा कि यह विज्ञान उत्सव स्कूली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच उत्पन्न करने में मील का पत्थर साबित प्रौद्योगिकी एवं नवाचार को समझने के लिए एक महान मंच उपलब्ध करवाया है। एसपीएसटीआई के सचिव प्रो. केया धर्मवीर ने तीन दिवसीय विज्ञान उत्सव की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। विज्ञान उत्सव के तीसरे दिन स्मॉल साइंस बिग ड्रीम्स विषय पर प्रो. नीरज दिलबागी ने व्याख्यान दिया। विज्ञान तथा पर्यावरण संरक्षण विषय पर एनएसएस टीम ने

जीजेयू में विज्ञान उत्सव के समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मानित करते मुख्यातिथि वीसी प्रो. बी.आर. काम्बोज, वीसी प्रो. नरसी राम बिश्नोई एवं अन्य।

मॉडल प्रदर्शनी में ओपी जिंदल मॉडर्न स्कूल पहले स्थान पर रहा

मॉडल प्रदर्शनी की स्कूल श्रेणी में प्रथम स्थान ओपी जिंदल मॉडर्न स्कूल के विवेन गोयल व सना तथा मनास गोयल व आरव शर्मा की टीमों को मिला। दूसरे स्थान पर जीएमएस दयाल सिंह कॉलोनी हांसी के हैप्पी व रोनक, पीएमश्री जीएसएसएस गंगवा की हिमांशी व महक, एसएंडटी जीएसएस डोभी के अनश व विशान, जीएसएस पुट्ठी सामण के सागर तथा आदर्श हाई स्कूल आदमपुर की एकता व करीना की टीमों को मिला। मॉडल प्रदर्शनी की महाविद्यालय श्रेणी में प्रथम स्थान राजकीय महाविद्यालय बरवाला के संजय कुमार, कॉलेज ऑफ फिशरी साइंस, सीसीएस हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार की सुहानी, अवनीश, लवीश शरण, मोहित, अजय, जय सैनी, कार्तिक व दीपक की टीम को संयुक्त रूप से मिला। दूसरे स्थान पर सीआरएम जाट महाविद्यालय हिसार की तनवी, सोनिका, उमंग व जसविन्द्र की टीम रही।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	7-02-25	3	1-6

हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो: प्रो.काम्बोज

हिसार, 6 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा है कि हमें ऐसे भारत की परिकल्पना करनी है जो ज्ञान की दृष्टि से सर्वोपरि हो तथा नागरिकों को खाद्य सुरक्षा मुहैया कराने के साथ.साथ प्रकृति का संरक्षण भी करे। विज्ञान से ही यह संभव बनाया जा सकता है।

प्रो.काम्बोज गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में आयोजित हुए विज्ञान उत्सव के समापन समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

गुजविप्रौवि के कुलपति प्रो.नरसी राम बिश्नोई इस समारोह में बतौर मुख्य संरक्षक उपस्थित रहे। प्रो.काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने की जिम्मेदारी देश के शिक्षकों की है। शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने विद्यार्थियों के सृजनात्मक कौशल की पहचान करें तथा उस कौशल को बढ़ाने के लिए कार्य करें।

उन्होंने कहा कि यह उत्सव निश्चित तौर पर विज्ञान व तकनीक को समाज के हर कोने तक पहुंचाने का कार्य करेगा। साथ ही उन्होंने कहा कि भविष्य की चुनौतियों के लिए देश के विश्वविद्यालयों को भी आपस में मिलकर कार्य करना होगा।

समापन समारोह में प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित करते मुख्यातिथि कुलपति प्रो. काम्बोज, कुलपति प्रो. बिश्नोई एवं अन्य अतिथिगण।

भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा: प्रो. बिश्नोई

कुलपति प्रो.नरसी राम बिश्नोई ने कहा है कि भारत में विज्ञान की समृद्ध परम्परा है। भारतीय वैज्ञानिकों ने दुनिया को विज्ञान, तकनीक एवं नवाचार के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही राह दिखाई है।

उन्होंने आर्यभट्ट, सीवी रमन, मैरी क्यूरी तथा डा.अब्दुल कलाम जैसे महान वैज्ञानिकों का जिक्र करते हुए विद्यार्थियों को बताया कि इन वैज्ञानिकों ने संघर्षों और चुनौतियों का सामना करते हुए विज्ञान की नई खोजों के माध्यम से समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपना सर्वोच्च योगदान दिया है।

विज्ञान केवल दुनिया को समझने के बारे में ही नहीं है, बल्कि यह विकास की नींव है और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक शक्ति भी है। चाहे अक्षय ऊर्जा हो, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हो, जैव प्रौद्योगिकी हो या अंतरिक्ष अन्वेषण होए विज्ञान में असीम संभावनाएं हैं। इस विज्ञान उत्सव ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत के युवा कंधे देश की महान वैज्ञानिक परम्परा को और तेजी से आगे बढ़ाएंगे, जिसके बल पर हम विकसित भारत /2047 के लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

एस.पी.एस.टी.आई. के सचिव प्रो.केया धर्मवीर ने तीन दिवसीय विज्ञान उत्सव की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

साइंस उत्सव की नोडल ऑफिसर डीन एफ.पी.एस.टी. प्रो.सुजाता सांघी ने स्वागत संबोधन किया तथा एस.पी.एस.टी.आई.के अध्यक्ष धर्मवीर सिंह ने धन्यवाद संबोधन प्रस्तुत किया।

विज्ञान तथा पर्यावरण संरक्षण विषय पर विश्वविद्यालय की एन.एस.एस. की टीम द्वारा नाटिका का मंचन भी किया गया।

ये रहे मॉडल प्रदर्शनी के विजेता

मॉडल प्रदर्शनी की स्कूल श्रेणी में प्रथम स्थान ओ.पी. जिंदल मॉडर्न स्कूल हिसार के विवेन गोयल व सना तथा मनास गोयल व आरव शर्मा की टीमों को मिला।

दूसरे स्थान पर जी.एम.एस. दयाल सिंह कॉलोनी हांसी के हैप्पी व रोनक, पी.एम.श्री जी.एस.एस.एस. गंगवा की हिमांशी व महक, एस.एंड.टी. जी.एस.एस. डोभी के अनश व विशान, जी.एस.एस. पुटठी समैण के सागर तथा आदर्श हाई स्कूल आदमपुर की एकता व करीना की टीमों को मिला।

मॉडल प्रदर्शनी की महाविद्यालय श्रेणी में प्रथम स्थान राजकीय महाविद्यालय बरवाला के संजय कुमार, कॉलेज ऑफफिशरी साइंस, हकृवि की सुहानी, अवनीश, लवीश शरण, मोहित, अजय, जय सैनी, कार्तिक व दीपक की टीम को संयुक्त रूप से मिला। दूसरे स्थान पर जाट महाविद्यालय की तनवी, सोनिका, उमंग व जसविन्द्र की टीम रही।